भूमिका

यह निर्विवाद है कि जातक कथाएँ बौद्ध-धर्म की देन है . चाहे वे गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की ही कथएँ हों. जिनका जन्म-गृह भारत का ' मध्यदेश ' है । भारतीय लोकवार्ता-क्षेत्र के अन्तर्निहित आनेवाली हिन्दी लोक कथाओं का जन्म-भूमि भी यही है . जो वर्तमान में ' हिन्दी-क्षेत्र या हिन्दी-प्रदेश ' कहलाता है । यह निश्चत है कि एक ही माँ से जन्म पाकर पृथक-पृथक परिस्थितियों में पल्लवित जुड़वी बहनों की भाँति ये उभय कथा परम्पराएँ आपसी समानताओं से अवश्य ओतप्रोत हैं ।

जातक कथाओं तथा हिन्दी लोक कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना इस शोध-कार्य का मुख्य उद्देश्य है । लोक वार्ता विषय-क्षेत्र के अन्तर्गत आनेवाली कथा कहने और सुनने की परम्परा मानव जीवन से सम्बन्धित एक विशिष्ट सहज प्रवृत्ति मानी जाती है । यह विदित है कि इसी सहज प्रवृत्ति से सम्बद्ध जातक कथा तथा हिन्दी लोक कथा परम्पराओं की तुलना की जाने से यह विषय-क्षेत्र वैज्ञानिक विश्लेषणों के क्षेत्र में आ जाता है । इस शोध-कार्य के दौरान न केवल उपर्युक्त उभय कथा परम्पराओं को सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण करने का महत्वपूर्ण अवसर मिल गया है. बल्कि इन कथा परम्पराओं की विशिष्टताओं और उनकी आधार भूमियों से परिचित होने का अवसर भी मिल गया है ।

इस अध्ययन में उभय कथा वर्गों के उद्भव-विकास विषयक चर्चा अधिकाधिक विस्तृत रूप से की गयी है । इसका तात्पर्य यह रहा कि उभय कथा परम्पराओं के सन्दर्भ में उपलब्ध विविध विचारों पर फिर एक बार ध्यान दिया जाए । विषयवस्तु तथा सन्देश सम्बन्धी तथ्यों का अवलोकन किया जाना इस विषय-क्षेत्र की नयी उपलब्धि मानी जा सकती है । उभय कथा-वर्गों में अनेक समानताएँ दिखायी देती हैं. जो इन कथा-वर्गों के वैज्ञानिक अध्ययन किये जाने की महत्ता पर अवश्य बल देती हैं । रूसी विद्वान व्लादिमीर प्रॉप द्वारा प्रस्तुत संरचनात्मक तुलना सम्बन्धी सिद्धान्त का उपयोग इन कथा-वर्गों में किया जाना एक नवीन अनुभव प्रतीत होता है ।

कथा-कला जन-संस्कृति की एक विशिष्ट देन मानी जाती है . जो जनसमाज को निरन्तर सजीव बनाये रखती है । ' कथा के बिना जीवन अधूरा है ' इस उक्ति से से भी ' कथा ' की महत्ता भला क्यों नहीं प्रकट होती ? इसी कला के विशिष्ट दृष्टान्तों के रूप में उपलब्ध जातक कथा तथा हिन्दी लोक कथा परम्पराओं की धार्मिक. सामाजिक और सांस्कृतिक महत्ता और मानवीय मूल्यों को खोजने के परिप्रेक्ष्य में इनकी उपादेयता अद्यतन युग के ज्वर-ग्रस्त मानव-

सकता है।

यहाँ पाठकों को एक अनोखा अनुभव देना चाहता हूँ। जातकट्ठकथा के आरम्भ में जातक कथाकार तथा मैथिली लोक कथाओं में लोक कथाकार अपनी-अपनी कथाकों को कह सुनाने से पहले यह कह रहे हैं. आशा है कि आप उन पर ज़रा ध्यान दें। पहले जातक कथाकार की उक्ति---

जातिकोटिसहस्सेहि पमाणरहितं हितं
लोकस्स लोकनाथेन कतं येन महेसिना
तस्स पदे नमस्सित्वा कत्वा धम्मस्स च अंजलिं
संघं च पतिमानेत्वा सब्बसम्मानभाजनं
नमस्सनादितो अस्स पुण्णस्सरतनत्तये
पवत्तास्सानुभावेन भेत्वा सबबे उपद्दवे
तं तं कारणं आगम्म देसितानि जुतीमता
अपण्णकादिनि पुरा जातकानि महेसिना
यानि येसु चिरं सत्था लोकनित्थरणत्थिको
अनन्ते बोधिसम्भारे परिपाचेसि नायको
तानि सब्बानि एकज्जं आरोपेन्तेहि संगहं
जातकं नाम संगीतं धम्मसंगाहकेहि यं
बुद्धवंसस्स एतस्स इच्छन्तेन चिरट्ठितिं
याचितो अभिगन्तवान थेरेन अत्थदिस्सना
असंसट्ठविहारेन सदा सद्धिविहारिना
तथ् ' एव बुद्धमित्तेन सन्तचित्तेन विञ्ञुना
महिंसासकवंसम्हि सम्भूतेन नयञ्ञुना
बुद्धदेवेन च तथा भिक्खुना सुद्धबुद्धिना
महापुरिसचरियानं आनुभावं अचिन्तियं
तस्स विज्जोतयन्तस्स जातकस्स 'अत्थवण्णनं
महाविहारवासिनं वाचनामग्गनिस्सितं
भासिस्सं. भासतो तम मे साधु गण्हन्तु साधवो। [1]

लाखों जन्मों से जिन महर्षि लोकनाथ ने संसार का अनन्त हित किया. उनके चरणों में प्रणाम करता हूँ : धर्म को हाथ जोड़ता हूँ : तथा सबसे आदरणीय (भिक्षु) संघ की पूजा करता हूँ। इन तीनों रत्नों के नमस्कारादि (से प्राप्त) इस पुण्य के प्रताप से सब उपद्रवों का नाश हो। प्रकाश-स्वरूप महर्षि (बुद्ध) ने अपण्णक आदि जातकों को पहले कहा. जिन्हें कि लोक के उद्धार की इच्छा से. नायक. शास्ता (बुद्ध) ने बुद्ध होने के लिए आवश्यक अनन्त सामग्री की प्राप्ति के लिए पूरा किया। उन सब पूर्व जन्म की कथाओं के संग्रह को धर्म (-ग्रंथ) संग्रह करनेवालों ने जातक नाम से संगायन किया। बुद्ध-धर्म की चिरस्थिति चाहनेवाले अर्थदर्शी स्थविर. सहवासी तथा एकान्तप्रेमी चित्त, पण्डित बुद्धिमित्त और महिंशासक वंश में उत्पन्न. शास्त्रज्ञ. शुद्ध-बुद्धि भिक्षु बुद्धदेव के कहने से महापुरुषों के चरित्र के अनन्त प्रभाव को करनेवालीजातक अर्थवर्णना की महाविहारवालों के मत के अनुसार व्याख्या करूँगा। मेरी इस व्याख्या को सब सज्जन अच्छी तरह ग्रहण करें। [2]

---

1. Fausboll, V. (Edi.) (1962) The Jātaka Vol. I. p. 1
2. कौसल्यायन.भदन्त आनन्द (अनु.) (1985) जातक I. पृ.1

अब देखें हिन्दी लोक कथाकार की उक्ति--

कैसी ऐसी झूठी
बात ऐसी अनूठी
कहनेवाला झूठा
सुननेवाला सच्चा
आँख का देखा नहीं कहता हूँ
कान का सुना कहता हूँ
कहनेवाले के सिर पर सोने का छत्तर
सुननेवाले के सिर पर अस्सी मन का पत्थर ![3]

इस शोध अध्ययन के प्रथम अध्याय में बौद्ध जातक कथा परम्परा विषयक चर्चा चार उप अध्यायों के अधीन विस्तारपूर्वक की गयी है। इसके अन्तर्गत ' जातक ' शब्द के विभिन्न आदि से अद्यतन तक के निर्वचनों को लेकर विचार-विमर्श किया गया है। जातकों की विकास प्रक्रिया के सन्दर्भ में कालानुक्रम अपनाने का प्रयास किया गया है। मूलत: बौद्ध भिक्षु परम्परा के दो मुख्य सम्प्रदायों-- हीनयान तथा महायान--में उपलब्ध विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों तथा पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर कालानुक्रम पर आधारित जातकों की विकास परम्परा प्रस्तुत की गयी है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आदि से अद्यतन तक के जातकों से सम्बन्धित श्री लंका में उपलब्ध तथ्यों का पर्याप्त विवरण इसमें दिया गया है। क्योंकि. वहाँ जातकों से सम्बन्धित गतिविधियों की एक जीवंत परम्परा वर्तमान में भी विद्यमान होती है। साथ-साथ दक्षिण-पूर्व-एशियाई देशों में विद्यमान जातक सम्बन्धी गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला गया है। और जातकों के प्रभाव की व्यापकता के सन्दर्भ में न केवल भारतीय कथा साहित्य की चर्चा की गयी. बल्कि विश्वीय कथा साहित्य की भी।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी लोक कथा परम्परा को तीन उप अध्यायों के अधीन चर्चित है। प्रथमत: यह निर्णय कर लेने पर ध्यान दिया गया है कि ' हिन्दी-क्षेत्र अथवा हिन्दी-प्रदेश ' किसे कहते हैं ? इस सन्दर्भ में अनेक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किये गये विचारों की छान-बीन की गयी है। हिन्दी लोक कथाओं का उद्भव एवं विकास विषयक चर्चा में आर्य-पूर्व युग से लेकर अद्यतन युग तक की विकास प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दिया गया है। हिन्दी लोकवार्ता-क्षेत्र में अनेक मतिमतान्तरों की भरमार होना असाधारण बात तो नहीं। अत: हिन्दी लोक कथाओं के वर्गीकरण विषयक

चर्चा में उपलब्ध पर्याप्त मतों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। और इससे यह स्पष्टतया प्रकट हो गया है कि हिन्दी लोक कथा परम्परा की गहराई तथा व्यापकता कहाँ तक है।

तृतीय अध्याय में जातकों तथा हिन्दी लोक कथाओं के विषयवस्तु एवं सन्देश सम्बन्धी तथ्यों की सूक्ष्म ढंग से चर्चा की गयी है। दो उप अध्यायों में जातकों के विषयवस्तु तथा सन्देश सम्बन्धी तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं. जबकि और दो उप अध्यायों में हिन्दी लोक कथाओं के विषयवस्तु तथा सन्देश सम्बन्धी तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं। पाँचवें उप अध्याय में उभय कथा-वर्गों के विषयवस्तु तथा सन्देश सम्बन्धी तुलना की गयी है। यह उल्लेखनीय है कि इसमें उभय कथा-वर्गों की मौलिक पृष्ठभूमियों का अनावरण हो गया है।

चौथे अध्याय में रूसीविद्वान व्लादिमीर प्रॉप द्वारा प्रस्तुत संरचनात्मक सिद्धान्त का प्रयोग करते हुए जातकों तथा हिन्दी लोक कथाओं में से नमूने की भाँति चयनित कथाओं का संरचनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसमें संरचनात्मक अध्ययनों का संक्षिप्त इतिहास भी प्रस्तुत किया गया है। साथ-साथ अन्तर-सांस्कृतिक तथा अन्तर-जातीय परिस्थितियों में प्रॉप के सिद्धान्त कीउपादेयता पर भी चर्चा की गयी है।

पाँचवें अध्याय में प्रभाव विश्लेषण के अन्तर्गत जातकों तथा हिन्दी लोक कथाओं के मध्य दिखायीदेनेवाली मुख्यत: कथानकों की समानताओं पर प्रकाश डाला गयाहै। और इसी अध्याय में इस शोध अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

परिशिष्ट I में जातकट्ठकथा. सिंहली जातक-संग्रह (पन्सिय् पनस् जातक् पॉत् वहन्से). जातकमाला. पञ्ञास जातक आदि हीनयान तथा महायान दोनों सम्प्रदायों से सम्बन्धित जातक कथाओं के नामों की सूची प्रस्तुत की गयी है. जो शोध-प्रबंध के अध्यायों में चर्चित विषयों से नितान्त सम्बद्ध है। साथ-साथ श्री लंका के बौद्ध समाज में पूर्णिमा के दिनों में होनेवाली विशेष गतिविधियों का उल्लेख भी किया गया है।

परिशिष्ट 2 में जातक कथाओं तथा हिन्दी लोक कथाओं के विषयवस्तु तथा मूलतत्व विषयक चर्चा से सम्बन्धित वर्गीकरणों को तालिकाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध अध्ययन में उपयोगी चयनित हिन्दी लोक कथाओं के संकलनों की सूची यहाँ दी गयी है. जो अत्यावश्यक समझता हुँ।

सन्दर्भ-ग्रंथ-सूची में शोध में उपयोगी क्रमश: हिन्दी. अंग्रेज़ी तथा सिंहली ग्रंथों. पत्र-पत्रिकाओं आदि का पूरा विवरण दिया गया है। साथ-साथ परिशीलित विश्वकोशों तथा कोशों की सूची भी यहाँ प्रस्तुत हुई है।

उपकारानुस्मृति के अधीन सर्वप्रथम मेरे शोध निर्देशक श्रद्धेय गुरुवर प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय जी को अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ . जिन्होंने इस शोध अध्ययन के लिए मुझे मार्गोपदेश दिया । मेरा यह विश्वास है कि उनकी स्नेहमयी प्रेरणा तथा कृपापूर्ण सहायता से ही इस शोध-कार्य को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने का सुअवसर मिला है। यह सत्य है कि उनके प्रति मेरा हृदयंगम गौरव व्यक्त करने के लिए शब्द न केवल हिन्दी में . बल्कि मेरी मातृभाषा सिंहली में भी नहीं है। मेरा यह भी विश्वास है इस संसार-यात्रा में कभी किसी जन्म में मैं उनका छात्र रहा था । गुरुपितृ सदृश इस श्रद्धेय गुरुवर का मैं सहस्रश: आभारी हूँ और नतमस्तक हूँ ।

मेरे पूज्य संगीताचार्य वाद्य विशारद. कला भूषण श्री लीलानन्द रत्नायक जी (श्री लंका) का मैं चरणस्पर्शी प्रणाम के साथ इस अवसर पर स्मरण करता हूँ . जिन्होंने मेरे जीवन में सर्वप्रथम हिन्दी भाषा. साहित्य. संस्कृति तथा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत आदि विषयों का परिचय दिया था ।

श्री लंका के कॅलणिय विश्वविद्यालय के सिंहली विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर. पूर्व मानवशास्त्र संकायाध्यक्ष तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रसिरि पल्लियगुरु ने इस शोध विषय के सम्बन्ध में श्री लंका में उपलब्ध जातकों की सामग्री संकलन हेतु न केवल अनेक उपदेश दिये. बल्कि राजस्थान में प्रकाशित जातकों से सम्बन्धित एक हिन्दी लेख. जो उनके पास था . यहाँ भेज देने की भी कृपा की । वह लेख इस शोध-कार्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था । यह भी कहना मेरा कर्त्तव्य समझता हूँ कि उन्होंने ही मुझे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में आकर पीएच्. डी. करने का मार्गदर्शन किया था। उनके प्रति मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ ।

कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिन्दी अध्ययन विभाग की अध्यक्षा मेरी आदरणीय गुरु जी डॉ. (श्रीमती) इन्द्रा दसनायक जी का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ . जिन्होंने मुझे हिन्दी ज्ञान से लाभान्वित किया । साथ-साथ इस अवसर पर इसी विभाग के मेरे आदरणीय गुरु रहे दिवंगत प्रवक्ता रविलाल विमलधर्म जी के नाम का भी स्मरण दिलाना चाहता हूँ । भाषा विज्ञान विभाग के सेवानिवृत्त. सम्माननीय वरिष्ठ प्रो. डब्लिव्. एस्. करुणातिलक जी. वरिष्ठ प्रवक्ता पूज्य भिक्षु तपोवनये सुतधर थेरो. सिंहली विभाग के अध्यक्ष प्रो. गामिणी दैळबंडार जी.समाज विज्ञान विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. के. करुणातिलक. इतिहास विभाग के प्रवक्ता पूज्य भिक्षु गल्कन्दे धम्मानन्द थेरो तथा पेरादेणिय विश्वविद्यालय के सम्भाव्य भाषा विभाग के अध्यक्ष प्रो. डी. पी. एम्. वीरक्कॉडि जी आदि का भी मैं आभारी हूँ . जिन्होंने इस अध्ययन के दौरान विभिन्न अवसरों पर मुझे सहयोग दिया ।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी तथा भारतीय आधुनिक भाषा विभाग के सेवानिवृत्त. सम्माननीय प्रोफेसर

प्रभाकर शुक्ल जी और उनके परिवारजनों (श्रीमती शुक्ल तथा कुमारी अल्का) का मैं अत्यन्त आभारी हूँ . जिन्होंने इस शोध-कार्य के क्षेत्र-अध्ययन को सफल बनाने हेतु अनेक सहायताएँ प्रदान कीं । साथ-साथ लखनऊ के प्रोफेसर जितेन्द्रनाथ पाण्डेय. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्विवेदी सहित बस्ती ज़िले के नियामतपुर |रामकुमार वर्मा. धनपति. राधेश्याम. रामशरण भोटिया. परशयराम मोरिया| . करहँटिया |रघुपत सिंह .पवन कुमार| . कन्हैपुर |पं. केदारनाथ मिश्रा| . मनोली गोसाई |विद्या प्रसाद. जिम्कान खलीफा|. आदि गावों के निवासियों का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ . जिन्होंने न केवल लोक कथाएँ कह सुनायीं. बल्कि स्नेहपूर्वक मेरा स्वागत भी किया . जो सदानुस्मरणीय है ।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय. साहित्य अकादमी पुस्तकालय. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्धता परिषद का पुस्तकालय आदि के सभी कर्मचारी. भारतीय भाषा केन्द्र (JNU) के अध्यक्ष प्रोफेसर नसीर अहमद खाँ जी, अध्यापक गण . अधिकारी, कर्मचारी आदि के साथ-साथ कुमारी उमा त्रिपाठी. कुमारी रमा त्रिपाठी. श्री अमरेन्द्रनाथ त्रिपाठी. श्री राजीव रंजन गिरि. श्री कमलेश कुमार वर्मा और श्रीमती वर्मा आदि सभी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ . जिन्होंने अनेक प्रकार के उपकार किये ।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्धता परिषद तथा भारत-श्री लंका प्रतिष्ठान का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ . जिन संस्थाओं ने इस शोध-कार्य को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने हेतु मुझे अनेक सुविधाएँ दीं ।

मेरे बड़े भाई श्री पुष्पानन्द हेवावितानगमगे के प्रति मेरा विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ. जिन्होंने इस शोध अध्ययन को मुद्रित रूप देने के लिए आवश्यक कम्पियुटर तथा अन्य आवश्यक उपकरण प्रदान किये ।

अब हमारे हितैषियों की बारी है . श्री लयनल् विजेसुन्दर (सचिव. श्री लंका उच्चायोग. नयी दिल्ली) . श्री के. सी. मलहोत्रा (बिक्री प्रबन्धक. निर्यात विभाग. UBSPD. नयी दिल्ली) श्रीमती माला चान्दनी गमगे (उच्चायुक्त की सचिव. भारतीय उच्चायोग. श्री लंका) . श्री पोल् डयस् (महा निदेशक. सॉका गक्कायि बौद्ध संस्थान. श्री लंका) आदि को भी मेरा हार्दिक धन्यवाद देता हूँ . जिन्होंने मेरे प्रति स्नेहपूर्वक अनेक उपकार किये ।

मेरी दयालु पत्नी प्रियदर्शनी और हमारी औरस-दुहितृ तरिषि तथा शशिनि ने अनेक कष्टों को सहते हुए इस शोध अध्ययन के दौरान मुझे मानसिक आराम दिलाने हेतु अद्वितीय प्रयास किया. जिनके प्रति मेरा असीम स्नेह प्रकट करना चाहता हूँ ।

उपुल रंजित हेवावितानगमगे

भारतीय भाषा केन्द्र. भाषा. साहित्य तथा संस्कृति अध्ययन संस्थान . जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय. नयी दिल्ली. भारत ।

अप्रेल 2004

Title: Baudh jatak katho tatha hindi lok katha ka tulnatmak adhyayn(à¤¬à¥Œà¤¦à¥à¤§ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤“à¤‚ à¤¤à¤¥à¤¾ à¤¹à¤¿à¤‚à¤¦à¥€ à¤²à¥‹à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤“à¤‚ à¤•à¤¾ à¤¤à¥à¤²à¤¨à¤¾à¤¤à¥à¤®à¤•. PDF Book â€“ Motivational StoriesadminT+ Toggle navigation. Motivational Stories 6 mb File Size; Downloads; Jatak Kathayen.Â à¤¡à¥€.à¤à¤«à¤¼ à¤ªà¥à¤°à¤¾à¤°à¥‚à¤ª à¤®à¥‡à¤‚ | Free Download Array in PDF Format | Name of the Book is: Sabhi Jatak Kathayen | This Book is written by Buddha | To Read and Download More Books written by Buddha in Hindi, Please Click. LanguageHindi. Hindi Book-Jatak-kathayen. IdentifierHindiBookJatakKathayen. Identifier-arkark://t3tt9k89q. à¤¸à¤®à¥à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤à¤ à¤ªà¥à¤‡à¤¸ à¤‡à¤¸ à¤²à¤¿à¤‚à¤• à¤ªà¤° : à¤¸à¤®à¥à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤à¤ ~ Complete Jatak Tales/Stories In Hindi. Categories: à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤à¤39 Great Stories606 Jatak Tales39. Recommended for you. Lion and Jackal ~ Jatak Tales In Hindi | à¤¸à¤¿à¤‚à¤¹ à¤”à¤° à¤¸à¤¿à¤¯à¤¾à¤° ~ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤à¤. Story of the Monkey King ~ Jatak Tales In Hindi | à¤®à¤¹à¤¾à¤•à¤ªà¤¿ à¤•à¥€ à¤¸à¥‚à¤-à¤¬à¥‚à¤ ~ à¤œà¤¾à¤¤à¤• à¤•à¤¥à¤¾à¤à¤.Â à¤à¤¾à¤°à¤¤ à¤•à¤¾ à¤¸à¤‚à¤µà¤¿à¤§à¤¾à¤¨ à¤¹à¤¿à¤‚à¤¦à¥€ à¤”à¤° à¤…à¤‚à¤—à¥à¤°à¥‡à¤œà¥€ à¤®à¥‡à¤‚ à¤¡à¤¾à¤‰à¤¨à¤²à¥‹à¤¡ à¤•à¤°à¥‡à¤‚ à¤®à¥à¤«à¥à¤¤!!|Download Constitution Of India FREE In Hindi & English !! à¤¸à¥à¤µà¤¾à¤®à¥€ à¤µà¤¿à¤µà¥‡à¤•à¤¾à¤¨à¤¨à¥à¤¦ à¤¦à¥à¤µà¤¾à¤°à¤¾ à¤•à¤¹à¥€ à¤—à¤¯à¥€à¤‚ à¤‰à¤•à¥à¤¤à¤¿à¤¯à¤¾à¤ | Great Quotations By Swami Vivekananda. Best Shiv Khera Quotes In Hindi ~ à¤¶à¤¿à¤µ à¤–à¥‡à¤¡à¤¼à¤¾ à¤•à¥‡ à¤…à¤¨à¤®à¥‹à¤² à¤µà¤¿à¤šà¤¾à¤° |. Complete Panchatantra Stories In Hindi ~ à¤ªà¤‚à¤šà¤¤à¤‚à¤¤à¥à¤° à¤•à¥€ à¤¸à¤®à¥à¤ªà¥‚à¤°à¥à¤£ à¤•à¤¹à¤¾à¤¨à¤¿à¤¯à¤¾à¤! à¤šà¤¾à¤£à¤•à¥à¤¯ à¤¨à¥€à¤¤à¤¿ [à¤¹à¤¿à¤‚à¤¦à¥€ à¤®à¥‡à¤‚] : à¤¸à¤¤à¥à¤°à¤¹à¤µà¤¾à¤‚ à¤…à¤§à¥à¤¯à¤¾à¤¯ | Chanakya Neeti [In Hindi]:Seventeenth Chapter. Baalgatha Hindi à¤¬à¤¾à¤²à¤—à¤¾à¤¥à¤¾ à¤¹à¤¿à¤‚à¤¦à¥€ à¤•à¤¹à¤¾à¤¨à¤¿à¤¯à¤¾à¤ - à¤¬à¤¾à¤²à¤—à¤¾à¤¥à¤¾ à¤ªà¤¾à¤¡à¥à¤•à¥ˆà¤¸à¥à¤Ÿ à¤¹à¤° à¤¹à¤«à¤¼à¥à¤¤à¥‡ à¤†à¤ª à¤•à¥‡ à¤²à¤¿à¤ à¤ªà¤‚à¤šà¤¤à¤‚à¤¤à¥à¤°, à¤œà¤¾à¤¤à¤•...Â Baalgatha Hindi à¤¬à¤¾à¤²à¤—à¤¾à¤¥à¤¾ à¤¹à¤¿à¤‚à¤¦à¥€ à¤•à¤¹à¤¾à¤¨à¤¿à¤¯à¤¾à¤. Category: Children. Created by: gaatha story.Â Jo Naseeb Mein Hai Wahi Hoga à¤¬à¤•à¤°à¥‡ à¤•à¥€ à¤•à¤¹à¤¾à¤¨à¥€. 24 Aug. 03:58. Dharmabuddhi-Paapabuddhi à¤§à¤°à¥à¤® à¤¬à¥à¤¦à¥à¤§à¤¿ à¤”à¤° à¤ªà¤¾à¤ª à¤¬à¥à¤¦à¥à¤§à¤¿. 24 Aug. 06:07.